जब बाबूजी ने मुख्यमंत्री पद ठुकराकर चौ. देवीलाल का पक्ष लिया

पुण्य तिथि पर विशेष

बाबूजी ने मुख्यमंत्री पद के लालच को छोड़ देवीलाल के पक्ष में दम लगाया परन्तु देवीलाल परिवार ने उन्हें हराया : चौ. चरण सिंह बाबूजी को मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं, इस बात का संकेत बाबूजी व उनके चंद नज़दीकी दोस्तों तक ही सीमित था। परन्तु चौ. देवीलाल के खेमे के लोगों को कुछ तो शक हो गया था शायद। बाबूजी के अनुसार, 'चौ. चरण सिंह के कट्टर समर्थकों को देवीलाल और चौटाला ने हराने की कोशिश की। देवीलाल ने परदे के पीछे से और चौटाला ने सरेआम कई जनसंघी उम्मीदवार हरवाएं। बाबूजी भी चुनाव हार गए या संभवतयः कोशिश करके उन्हें हराया गया

गांधीवादी नेता व स्वतन्त्रता सेनानी बाबू मूलबन्द जैन, जिनकी आज 22वीं पुण्य तिथि है। पद के मोह में कभी नहीं फंसे, यह सभी जानते हैं, परंतु यह शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि जब चौ. देवीलाल के स्थान पर चौ चरणसिंह जी ने वास्तव में ही उन्हें मुख्यमंत्री पद के लिये इशारा किया तो बाबूजी ने क्या प्रतिक्रिया दी। यह उस समय की बात है जब 1982 का चुनाव बाबूजी लोकदल के टिकट से लड़े थे। इस चुनाव से पहले चौ. चरण सिंह व देवी लाल में बहुत मतभेद हो गया था। चौ देवीलाल ने अपने नेता चौ.चरण सिंह को ही इतना बुरा-भला कह दिया कि चौधरी चरण सिंह अपने उस अपमान को नहीं भूल पाए। इसीलिये वे हरियाणा में देवीलाल की सत्ता व प्रभाव खत्म करना चाहते थे।

उस समय चौ. चरण सिंह ने बाबूजी को यहां तक कह दिया था कि वे बाबूजी को हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं। इसके बावजूद बाबूजी ने चौ. देवीलाल का साथ नहीं छोड़ा। जबकि लोकदल के केन्द्रीय अध्यक्ष चौ. चरण सिंह के इस प्रत्यक्ष संकेत को बाबूजी अपने पक्ष में एक स्वर्णिम अवसर मान कर, चौ. देवीलाल से नाराज़ चल रहे चौ. चरण सिंह को उनके विरूद्ध और ज्यादा भड़का कर अपने नंबर बना सकते थे। किन्तु बाबूजी को अपने मित्र को धोखा देकर उनकी जगह स्वयं लेना कभी गवारा नहीं था। इसलिये उन्होंने चौ. देवीलाल के प्रति चौ. चरण सिंह की नाराजगी समाप्त करने के लिए पत्राचार द्वारा तथा स्वयं भी उनसे मिल कर ऐसी-ऐसी दलीलें दी कि चौ. चरण सिंह को शांत होना पड़ा। बाबूजी की वैबसाइट moolchandjain.org के पत्राचार विभाग में चौ. चरण सिंह को लिखा बाबूजी का दिनांक 9 मई 1981 का पत्र इस बात का गवाह है। उस पत्र के कुछ मुख्य अंश निम्न दिये गये हैं।

''----चौ. देवीलाल में कई कमियां हैं तो गुण भी है और अहंकार भी। लेकिन हकीकत यही है कि उन जैसा अथक कार्यकर्ता हरियाणा में कोई नहीं है। कुछ विरोधी लोग आपके पास आकर उनके अवगुणों को बढ़ा चढ़ा कर बताते हैं। उनकी कुछ गलतियों की वजह से आप उनके प्रति पूर्वाग्रही हो गए हैं। आपने स्वीकार भी किया था कि आप उनके प्रति Conditioned हैं। मैंने आपको यह कहा था कि आप केवल एक राजनीतिज्ञ ही नहीं, एक आन्दोलन के जन्मदाता हैं। क्षमावृति के बिना कोई आन्दोलन सफल खड़ा नहीं हो सकता।----''

चन्द दिनों बाद बाबूजी के अथक प्रयास से चौ. देवीलाल का चौ. चरणसिंह से समझौता हो गया और सब लोग लोकदल में ही रहे। उन्हीं दिनों की एक घटना है, जिससे सिद्ध होता है कि चौ. चरण सिंह, देवीलाल व चौटाला से कितने नाराज थे। देवीलाल के कहने पर बाबूजी और मनोहर लाल सैनी, जो उस समय हरियाणा लोकदल के सदस्य थे। चौ. चरण सिंह से मिले और उन्हें बतलाया कि 'चौ. देवी लाल का परिवार उनका सदा वफादार रहा है। देवी लाल की कही हुई गलत बातों को भूल कर वे उन्हें क्षमा कर दें'।

बातों-बातों में बाबूजी ने उन्हें यह भी याद दिला दिया कि 23 दिसम्बर 1978 को चौ. चरणसिंह के जन्म दिन को ऐतिहासिक रूप से मनाया जाने का श्रेय देवी लाल को भी है'। चौ. चरण सिंह का जवाब याद रखने योग्य है। उन्होंने कहा, ''हॉ भाई जैन, मेरी फोटो छपवालो, उन्हें बेचो, कुछ रुपया मुझे दे दो, और बाकी खा जाओ''। उनके इस उत्तर से स्पष्ट है कि वे चौ. देवीलाल से कितने आहत व अपमानित अनुभव कर रहे थे और उनके मन में कितनी ज़बरदस्त कड़वाहट भरी थी देवी लाल जी के प्रति! शायद, यही कारण रहा होगा कि दोबारा लोकदल में आने के बावजूद चौ. चरण सिंह व देवी लाल में तनाव बना ही रहा। और इसी कारण से 1982 के चुनाव के लिए लोकदल के टिकट देने पर भी काफी मतभेद रहा।

बाबूजी ने मुख्यमंत्री पद के लालच को छोड़ देवीलाल के पक्ष में दम लगाया परन्तु देवीलाल परिवार ने उन्हें हराया : चौ. चरण सिंह बाबूजी को मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं, इस बात का संकेत बाबूजी व उनके चंद नज़दीकी दोस्तों तक ही सीमित था। परन्तु चौ. देवीलाल के खेमे के लोगों को कुछ तो शक हो गया था शायद। बाबूजी के अनुसार, 'चौ. चरण सिंह के कट्टर समर्थकों को देवीलाल और चौटाला ने हराने की कोशिश की। देवीलाल ने परदे के पीछे से और चौटाला ने सरेआम कई जनसंघी उम्मीदवार हरवाएं।

बाबूजी भी चुनाव हार गए या संभवतयः कोशिश करके उन्हें हराया गया क्योंकि तब तक चौ. देवीलाल के खेमे को यह भनक लग गई थी कि चौ. चरण सिंह बाबूजी को मुख्यमंत्री बनाना चाहते थे। श्री देवी लाल व चौटाला की नीति का परिणाम यह हुआ कि हरियाणा विधानसभा में लोकदल के सदस्यों की गिनती कांग्रेसी सदस्यों से कम रह गई और गवर्नर श्री तपासे ने कांग्रेस विधायक पार्टी को सबसे बड़ी पार्टी समझते हुए उसके नेता भजनलाल को सरकार बनाने के लिए निमन्त्रण दे दिया जिससे भजनलाल दोबारा मुख्यमत्री बन गए। मुख्यमंत्री बनते ही उन्होंने न केवल कई स्वतन्त्र विधयकों को खरीद लिया अपितु लोकदल के भी कुछ विधयकों को अपने साथ मिला लिया। लोकदल के विधायकों की गिनती कम होती चली गई।' बाबूजी किसी पद पर रहे या नहीं रहे, यह उनके लिये कतई महत्वपूर्ण नहीं था। उनके लिये कुछ महत्वपूर्ण था तो उनका वंचित लोगों की सेवा करना, उनके हकों की रक्षा और प्रजातन्त्र की रक्षा करना। वे सामाजिक एवं आर्थिक आजादी के लिये जीवन भर समर्पित रहे।